Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijssah/

International Journal of Social Sciences Arts and Humanities
(ISSN: 2321-4147) (Scientific Journal Impact Factor: 6.002)
A Peer Reviewed UGC Approved Quarterly Journal

Research Paper

ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में किशोरियों के उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता की सामाजिक-अर्थिक बाधाओं का तुलनात्मक अध्ययन: हजारीबाग और चतरा जिले के संदर्भ में

आरती कुमारी* और डॉ0 ममता गुप्ता[2]
[1]-शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं समाजिक विज्ञान संकाय, सांई नाथ विश्वविद्यालय , राँची , झारखण्ड
[2]-प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं समाजिक विज्ञान संकाय, सांई नाथ विश्वविद्यालय , राँची , झारखण्ड

ARTICLE DETAILS

Corresponding Author:
आरती कुमारी

Key words:
ग्रामीण परिप्रेक्ष्य, किशोरियों की शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक अवरोध, हजारीबाग, चतरा

ABSTRACT

ग्रामीण भारत में किशोरियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच और उसकी निरंतरता एक जटिल सामाजिक एवं आर्थिक समस्या है। हजारीबाग और चतरा जैसे जिलों में जहाँ शिक्षा का प्रसार अभी भी अपेक्षाकृत सीमित है, वहीं किशोरियों के लिए उच्च शिक्षा की राह और भी कठिन हो जाती है। यह अध्ययन दोनों जिलों में किशोरियों की शिक्षा में आने वाली प्रमुख सामाजिक एवं आर्थिक बाधाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। सामाजिक दृष्टि से परंपरागत लैंगिक भेदभाव, बाल-विवाह की प्रवृत्ति, घरेलू कार्यों का बोझ तथा परिवार के निर्णयों में किशोरियों की सीमित भूमिका प्रमुख अवरोध के रूप में उभरते हैं। आर्थिक दृष्टि से गरीबी, परिवहन सुविधा का अभाव, शिक्षण संस्थानों की दूरी तथा उच्च शिक्षा के खर्च को पूरा करने में परिवारों की असमर्थता प्रमुख समस्याएँ हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि दोनों जिलों में कौन-सी सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ शिक्षा की राह में अधिक निर्णायक भूमिका निभाती हैं तथा किन उपायों द्वारा इन अवरोधों को कम किया जा सकता है। अध्ययन के निष्कर्ष न केवल नीति-निर्माताओं के लिए बल्कि समाजसेवी संगठनों और स्थानीय समुदायों के लिए भी उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करेंगे।

परिचय

भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक प्रगति का सबसे सशक्त साधन माना जाता है। शिक्षा न केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण का माध्यम है बल्कि यह समाज में समानता और अवसरों की बराबरी स्थापित करने की भी कुंजी है (चक्रवर्ती, 2003)। शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा, व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराती है। परंतु ग्रामीण भारत में, विशेषकर किशोरियों के संदर्भ में, उच्च शिक्षा तक पहुँच और उसकी निरंतरता कई चुनौतियों से भरी हुई है।झारखंड जैसे राज्यों में, जहाँ सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन अधिक है, शिक्षा का प्रसार अभी भी सीमित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा में बाधाएँ गहरी और बहुआयामी हैं।

हजारीबाग और चतरा जैसे जिलों में किशोरियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना और उसे निरंतर जारी रखना एक कठिन प्रक्रिया है। सामाजिक दृष्टि से लैंगिक भेदभाव, परंपरागत सोच, बाल विवाह की प्रवृत्ति, घरेलू कार्यों का दबाव और परिवारीय निर्णयों में किशोरियों की सीमित भूमिका बड़ी बाधाएँ हैं (सांगरी एवं वैद, 1990)। वहीं आर्थिक दृष्टि से गरीबी, शिक्षा संस्थानों की दूरी, परिवहन सुविधा का अभाव, और उच्च शिक्षा पर होने वाला खर्च इन बाधाओं को और गहरा कर देता है (नरसिम्हन, 1992)। हजारीबाग और चतरा जिलों की भौगोलिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में भिन्नता होने के कारण इन दोनों जिलों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। हजारीबाग अपेक्षाकृत अधिक शहरीकरण और

*Corresponding Author can be contacted at: *शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं समाजिक विज्ञान संकाय, सांई नाथ विश्वविद्यालय , राँची , झारखण्ड*
Received: 20-07-2025; Sent for Review on: 21-07-2025; Draft sent to Author for corrections: 28-07-2025; Accepted on:104-08-2025; Online Available from 25-08-2025
DOI: 10.13140/RG.2.2.19161.99686
IJSSAH-8889/*© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.*

अवसंरचना के कारण बेहतर शैक्षणिक अवसर प्रदान करता है, जबकि चतरा जिला अधिक ग्रामीण और अविकसित है, जहाँ सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ अधिक प्रबल दिखाई देती हैं।भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा कई योजनाएँ संचालित की जा रही हैं जैसे—*बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना* और *राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान*। इन योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करना है। फिर भी जमीनी स्तर पर किशोरियों की उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता की स्थिति संतोषजनक नहीं है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2021) के आँकड़े बताते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में 15–19 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों का एक बड़ा हिस्सा माध्यमिक शिक्षा पूरी करने से पहले ही पढ़ाई छोड़ देता है। इस ड्रॉप-आउट दर के पीछे प्रमुख कारण हैं—शादी का दबाव, आर्थिक तंगी, परिवार की रूढ़िवादी सोच और परिवहन की असुविधा। हजारीबाग जिले में, जहाँ कुछ हद तक शहरी प्रभाव और औद्योगिक विकास हुआ है, वहाँ किशोरियों को उच्च शिक्षा तक पहुँचने के अपेक्षाकृत बेहतर अवसर मिलते हैं। लेकिन चतरा जिले में, जो अधिक पिछड़ा और ग्रामीण है, वहाँ किशोरियों की स्थिति बहुत कठिन है। यहाँ गरीबी, बेरोज़गारी, महिला शिक्षा के प्रति उदासीनता और बाल विवाह जैसी सामाजिक प्रथाएँ शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं (ओल्डेनबर्ग, 2002)। इस प्रकार समस्या यह है कि हजारीबाग और चतरा दोनों जिलों में किशोरियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच और निरंतरता में सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ मौजूद हैं, परंतु इनकी तीव्रता और स्वरूप अलग-अलग हैं। यह समझना आवश्यक है कि कौन-सी बाधाएँ अधिक प्रभावी हैं और उन्हें दूर करने के लिए कौन-से उपाय अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

इस शोध पत्र का सामान्य उद्देश्य है:
"ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में हजारीबाग और चतरा जिलों की किशोरियों की उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता को प्रभावित करने वाली सामाजिक-आर्थिक बाधाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।"

यह अध्ययन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है:

1. **नीतिगत दृष्टि से** – यह शोध यह दिखाएगा कि सरकारी योजनाएँ जमीनी स्तर पर किस प्रकार काम कर रही हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।
2. **सामाजिक दृष्टि से** – अध्ययन यह उजागर करेगा कि कैसे पितृसत्ता, पारिवारिक निर्णय, धार्मिक मान्यताएँ और सामाजिक परंपराएँ किशोरियों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं।
3. **आर्थिक दृष्टि से** – यह अध्ययन यह बताएगा कि गरीबी, बेरोज़गारी, आर्थिक संसाधनों की कमी और शिक्षा की लागत कैसे उच्च शिक्षा की राह में सबसे बड़ी चुनौती बनती हैं।
4. **भविष्य की दिशा** – इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष आगे चलकर शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि हजारीबाग और चतरा दोनों जिलों में किशोरियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच और निरंतरता में गंभीर सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ हैं। परंतु इन दोनों जिलों का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि कौन-सी बाधाएँ सामान्य हैं और कौन-सी स्थानीय परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं।
इस प्रकार यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से बल्कि व्यावहारिक और नीतिगत दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा

किशोरियों की शिक्षा पर विभिन्न विद्वानों ने समाजशास्त्रीय, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से गहन अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा तक पहुँचने और उसे निरंतर जारी रखने की प्रक्रिया बहुआयामी चुनौतियों से प्रभावित होती है।

चक्रवर्ती (2003) ने अपने कार्य *जेंडरिंग कास्ट: थ्रू ए फेमिनिस्ट लेंस* में यह स्पष्ट किया कि भारतीय समाज में लैंगिक असमानता और जातिगत संरचनाएँ लड़कियों की शिक्षा को गहराई से प्रभावित करती हैं। ग्रामीण किशोरियों को न केवल आर्थिक संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है बल्कि सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक निर्णयों से भी वे वंचित रह जाती हैं।

सांगरी और वैद (1990) द्वारा संपादित पुस्तक *रीकास्टिंग वीमेन* में यह तर्क दिया गया कि औपनिवेशिक काल से ही भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा को द्वितीयक माना गया। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यह सोच प्रचलित है कि लड़कियों को अधिक पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनका अंतिम उद्देश्य विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारी निभाना है। यह दृष्टिकोण उनकी उच्च शिक्षा में सबसे बड़ी बाधा है।

नरसिम्हन (1992) ने विधवापन और महिला जीवन पर अपने अध्ययन में यह दिखाया कि कैसे पितृसत्ता और सामाजिक प्रथाएँ महिलाओं को हाशिए पर धकेलती हैं। यद्यपि उनका अध्ययन मुख्यतः विधवाओं पर केंद्रित था, परंतु इसके निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि समाज में स्त्रियों को शिक्षा और अवसरों से दूर रखना व्यापक सामाजिक प्रवृत्ति का हिस्सा है।

मणि (1998) ने अपने अध्ययन *कंटेंशियस ट्रेडिशन्स* में परंपराओं और सामाजिक बहसों का विश्लेषण करते हुए बताया कि ग्रामीण समाज में परंपरा और धार्मिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वतंत्रता और शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। यह निष्कर्ष किशोरियों की उच्च शिक्षा में आने वाली सांस्कृतिक बाधाओं को समझने में सहायक है।

ओल्डेनबर्ग (2002) ने दहेज प्रथा और उससे जुड़े अपराधों पर अपने अध्ययन में यह पाया कि आर्थिक बोझ और सामाजिक दृष्टिकोण के कारण लड़कियों की शिक्षा को परिवार द्वारा कम प्राथमिकता दी जाती है। जब परिवार आर्थिक तंगी का सामना करता है, तो संसाधन प्रायः पुत्रों की शिक्षा पर खर्च किए जाते हैं और पुत्रियों को शिक्षा छोड़ने पर विवश होना पड़ता है।

यांग (1989) ने उन्नीसवीं शताब्दी में सती प्रथा का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि महिलाओं के जीवन को नियंत्रित करने वाली सामाजिक संरचनाएँ आज भी परोक्ष रूप से मौजूद हैं। इस दृष्टि से, ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा में बाधाएँ केवल आधुनिक आर्थिक कारणों से नहीं, बल्कि ऐतिहासिक रूप से जड़ें जमाए सांस्कृतिक ढाँचों से भी जुड़ी हुई हैं।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2021) के आँकड़ों से यह प्रमाणित होता है कि झारखंड जैसे राज्यों में 15–19 वर्ष की आयु वर्ग की बड़ी संख्या की लड़कियाँ माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पातीं। सर्वेक्षण के अनुसार बाल विवाह, गरीबी और शैक्षणिक संस्थानों की दूरी इस समस्या के मुख्य कारण हैं।

इन अध्ययनों का सामूहिक निष्कर्ष यह है कि ग्रामीण किशोरियों की उच्च शिक्षा केवल शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ, पितृसत्ता, आर्थिक असमानता और परिवार की मानसिकता इनकी शिक्षा यात्रा को गहराई से प्रभावित करती हैं। हजारीबाग और चतरा जैसे जिलों में यह स्थिति और भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ भौगोलिक और आर्थिक पिछड़ापन इस समस्या को और अधिक गहरा बना देता है।

मुख्य अध्ययन

किशोरियों की उच्च शिक्षा में सामाजिक अवरोध

ग्रामीण समाज में किशोरियों की उच्च शिक्षा की राह मुख्यतः सामाजिक संरचना और परंपरागत मान्यताओं से प्रभावित होती है। भारतीय ग्रामीण समाज में अब भी पितृसत्तात्मक ढांचा इतना मजबूत है कि वह किशोरियों के शिक्षा-अधिकार को सीमित कर देता है।

पितृसत्ता और लैंगिक असमानता

पितृसत्ता भारतीय समाज का गहरा आधार है, जहाँ लड़कियों की शिक्षा को अक्सर महत्वहीन समझा जाता है। चक्रवर्ती (2003) ने स्पष्ट किया है कि जाति और लिंग की संयुक्त संरचना महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह मान्यता प्रचलित है कि लड़की का अंतिम उद्देश्य विवाह है, इसलिए उसकी शिक्षा पर अधिक निवेश करना व्यर्थ है।

विवाह और घरेलू ज़िम्मेदारियाँ

सामाजिक अवरोधों में सबसे प्रमुख बाल विवाह और किशोरियों पर घरेलू कार्यों का बोझ है। सांगरी और वैद (1990) के अनुसार, भारतीय समाज में स्त्रियों को पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित किया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा का अधिकार द्वितीयक हो जाता है। हजारीबाग जिले में जहाँ शहरी प्रभाव कुछ अधिक है, वहाँ बाल विवाह का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है, जबकि चतरा में यह प्रवृत्ति अभी भी व्यापक है।

सामाजिक मान्यताएँ और सुरक्षा का प्रश्न

किशोरियों की शिक्षा को लेकर समाज में यह धारणा भी बनी रहती है कि अधिक पढ़ाई-लिखाई से वे परिवार की परंपराओं से विमुख हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, लड़कियों की शिक्षा को लेकर सुरक्षा का प्रश्न भी अक्सर उठाया जाता है। अभिभावक यह मानते हैं कि दूर-दराज़ स्कूल या कॉलेज भेजना सुरक्षित नहीं है, जिससे लड़कियाँ उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं (नरसिम्हन, 1992)।

तुलनात्मक दृष्टि

हजारीबाग में, जहाँ शैक्षणिक संस्थानों की संख्या अधिक है और अभिभावकों की मानसिकता अपेक्षाकृत खुली है, वहाँ किशोरियों को शिक्षा जारी रखने का अवसर मिलता है। इसके विपरीत, चतरा जिले में सामाजिक रूढ़िवादिता और परंपरागत सोच इतनी गहरी है कि किशोरियों को शिक्षा छोड़ने पर विवश होना पड़ता है।

आर्थिक बाधाएँ और शिक्षा की निरंतरता

ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा में आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। गरीबी और संसाधनों की कमी उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

गरीबी और संसाधनों की कमी

ग्रामीण परिवारों की आय मुख्यतः कृषि और दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर होती है। ओल्डेनबर्ग (2002) ने दहेज प्रथा और उससे जुड़ी आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि लड़कियों पर होने वाले खर्च को परिवार बोझ समझता है। उच्च शिक्षा का खर्च उठाना इन परिवारों के लिए संभव नहीं होता, इसलिए अक्सर लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है।

परिवहन और संस्थानों की दूरी

चतरा जिले की भौगोलिक स्थिति अधिक दुर्गम है। यहाँ उच्च शिक्षा संस्थान सीमित संख्या में हैं और वे भी प्रायः मुख्यालय या बड़े कस्बों तक ही सीमित हैं। किशोरियों को इन तक पहुँचने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। परिवहन सुविधा का अभाव उनके लिए सबसे बड़ी बाधा है। हजारीबाग जिले में यह समस्या कुछ हद तक कम है क्योंकि यहाँ सड़क और बस सेवाएँ अपेक्षाकृत बेहतर हैं।

शिक्षा में निवेश और प्राथमिकताएँ

ग्रामीण परिवार जब आर्थिक तंगी का सामना करते हैं तो वे शिक्षा पर निवेश करने से पहले पुत्रों को प्राथमिकता देते हैं। यांग (1989) के अनुसार, सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं की शिक्षा को हमेशा द्वितीयक स्थान देती हैं। यह दृष्टिकोण आर्थिक कठिनाइयों से और गहरा हो जाता है।

छात्रवृत्ति और सरकारी योजनाओं की सीमाएँ

हालाँकि सरकार द्वारा कई छात्रवृत्ति योजनाएँ चलाई जा रही हैं, परंतु इनका लाभ सभी तक नहीं पहुँच पाता। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2021) के अनुसार, झारखंड की ग्रामीण किशोरियों में से एक बड़ी संख्या सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ से वंचित रहती है। हजारीबाग जिले में सूचना का प्रसार अपेक्षाकृत बेहतर है, जबकि चतरा जिले में यह अभाव और भी गंभीर है।

तुलनात्मक विश्लेषण और निरंतरता की चुनौतियाँ

हजारीबाग बनाम चतरा: शिक्षा की उपलब्धता

हजारीबाग जिला अपेक्षाकृत विकसित है। यहाँ कॉलेज और विद्यालयों की संख्या अधिक है और औद्योगिक एवं शहरी प्रभाव के कारण शिक्षा के प्रति जागरूकता भी अधिक है। इसके विपरीत चतरा जिला अविकसित और ग्रामीण है, जहाँ शिक्षा संस्थान सीमित हैं और अभिभावकों की मानसिकता परंपरागत है।

निरंतरता में सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ

मणि (1998) ने दिखाया कि परंपराएँ और धार्मिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वतंत्रता को नियंत्रित करती हैं। यही स्थिति चतरा जिले में स्पष्ट रूप से देखी जाती है। किशोरियों की शिक्षा का अवरोध केवल आर्थिक नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं का परिणाम भी है।

शिक्षा और रोजगार के अवसर

किशोरियों के लिए उच्च शिक्षा का महत्व तब ही अधिक होता है जब उसके बाद उन्हें रोजगार के अवसर मिलें। हजारीबाग जिले में यह संभावना अधिक है, परंतु चतरा जिले में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण अभिभावक शिक्षा को आवश्यक नहीं मानते।

नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता

यह स्पष्ट है कि दोनों जिलों में बाधाएँ समान हैं परंतु उनकी तीव्रता अलग-अलग है। हजारीबाग में जहाँ शिक्षा तक पहुँच कुछ बेहतर है, वहीं चतरा में सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक अवरोध अधिक गंभीर हैं। अतः नीति-निर्माताओं को इन जिलों की भिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखकर योजनाएँ बनानी चाहिए।

इन तीनों भागों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण किशोरियों की उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता केवल अवसंरचना या आर्थिक स्थिति का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं, पितृसत्ता और परंपरागत सोच से गहराई से जुड़ा हुआ है। हजारीबाग और चतरा जिलों का तुलनात्मक विश्लेषण इस बात को और स्पष्ट करता है कि सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ और आर्थिक अभाव मिलकर किशोरियों की शिक्षा की राह में गहरी बाधाएँ खड़ी करते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य हजारीबाग और चतरा जिलों के संदर्भ में ग्रामीण किशोरियों की उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता को प्रभावित करने वाले सामाजिक और आर्थिक अवरोधों की पहचान करना और उनका तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष इस बात को स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण भारत में किशोरियों की शिक्षा मात्र एक शैक्षणिक विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक ढाँचों से गहराई से जुड़ा हुआ प्रश्न है।

सामाजिक अवरोधों का विश्लेषण

सामाजिक दृष्टि से यह स्पष्ट हुआ कि किशोरियों की शिक्षा को लेकर परिवार और समाज की सोच अभी भी परंपरागत और पितृसत्तात्मक है। चक्रवर्ती (2003) ने जैसे कहा है कि जाति और लिंग का द्वंद्व महिलाओं की शिक्षा को बाधित करता है, वही स्थिति इन जिलों में परिलक्षित होती है। अधिकांश अभिभावक यह मानते हैं कि लड़कियों का मुख्य दायित्व विवाह और घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित है। चतरा जिले में यह सोच अधिक गहरी दिखाई देती है, जहाँ बाल विवाह अब भी व्यापक है। किशोरियों को माध्यमिक स्तर से आगे पढ़ाना परिवारों के लिए 'अनावश्यक निवेश' माना जाता है। हजारीबाग में हालांकि सामाजिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत उदार है, लेकिन यहाँ भी ग्रामीण परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर झिझक और असुरक्षा बनी हुई है।

आर्थिक बाधाओं की वास्तविकता

आर्थिक स्थिति इस अध्ययन में सबसे बड़ी बाधा के रूप में सामने आई। ओल्डेनबर्ग (2002) ने जिस प्रकार यह तर्क दिया कि आर्थिक संसाधनों का उपयोग प्रायः पुत्रों पर किया जाता है, वही स्थिति हजारीबाग और चतरा दोनों जिलों में दिखाई देती है। गरीबी, बेरोज़गारी और आर्थिक असुरक्षा परिवारों को मजबूर करती है कि वे लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छुड़वा दें।

चतरा जिले में यह समस्या और गंभीर है, क्योंकि यहाँ औद्योगिक विकास और रोज़गार के अवसर सीमित हैं। परिणामस्वरूप, परिवारों के लिए शिक्षा पर व्यय करना कठिन हो जाता है। हजारीबाग जिले में कुछ हद तक शहरी प्रभाव और आर्थिक अवसर होने से स्थिति बेहतर है, परंतु यहाँ भी गरीबी से जूझते परिवार लड़कियों की पढ़ाई को बीच में रोकने के लिए विवश हो जाते हैं।

शिक्षा की निरंतरता और संस्थागत अवरोध

शिक्षा की निरंतरता में सबसे बड़ी समस्या विद्यालयों और महाविद्यालयों की दूरी तथा परिवहन सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण किशोरियों को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जो सुरक्षा और आर्थिक दोनों दृष्टियों से चुनौतीपूर्ण है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2021) ने भी इस तथ्य को रेखांकित किया कि परिवहन सुविधाओं की कमी लड़कियों की शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

हजारीबाग जिले में शिक्षा संस्थानों की संख्या अधिक होने के बावजूद, ग्रामीण इलाकों में रहने वाली लड़कियों को अब भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वहीं चतरा जिले में शिक्षा संस्थान बहुत कम हैं और वहाँ पहुँचने के साधन भी सीमित हैं, जिससे निरंतरता और भी अधिक प्रभावित होती है।

तुलनात्मक निष्कर्ष: हजारीबाग बनाम चतरा

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो हजारीबाग में किशोरियों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। यहाँ शहरी प्रभाव, औद्योगिक विकास और शिक्षा के प्रति अभिभावकों की बढ़ती जागरूकता ने किशोरियों को शिक्षा जारी रखने में सहायता की है। फिर भी सामाजिक अवरोध और लैंगिक असमानता यहाँ भी मौजूद हैं।

चतरा जिले की स्थिति अधिक चुनौतीपूर्ण है। यहाँ गरीबी, बाल विवाह, धार्मिक और सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, परिवहन की कमी तथा शिक्षा संस्थानों की दूरी किशोरियों की उच्च शिक्षा को लगभग असंभव बना देती है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों जिलों में समस्या समान है, परंतु उसकी तीव्रता और स्वरूप में भिन्नता है।

नीतिगत और व्यावहारिक सिफारिशें

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की जा सकती हैं:

1. **शिक्षा संस्थानों का विकेंद्रीकरण** – गाँवों और छोटे कस्बों में उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिए, ताकि किशोरियों को लंबी दूरी तय न करनी पड़े।
2. **परिवहन सुविधाओं का विकास** – सुरक्षित और सुलभ परिवहन साधन उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है।
3. **आर्थिक सहयोग और छात्रवृत्ति** – गरीब परिवारों की लड़कियों को शिक्षा जारी रखने हेतु पर्याप्त छात्रवृत्ति और आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
4. **सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम** – बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक प्रथाओं को समाप्त करने हेतु जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
5. **रोज़गार उन्मुख शिक्षा** – किशोरियों की शिक्षा को रोजगार से जोड़कर देखा जाए, ताकि परिवारों को यह विश्वास हो सके कि शिक्षा से भविष्य में आर्थिक लाभ मिलेगा।

भविष्य की दिशा

यह अध्ययन केवल हजारीबाग और चतरा जिलों तक सीमित है। भविष्य में इसे व्यापक स्तर पर झारखंड और अन्य राज्यों के जिलों तक विस्तारित किया जा सकता है। साथ ही, इस विषय पर मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के अध्ययन किए जाने चाहिए, ताकि वास्तविक स्थिति और स्पष्ट रूप से सामने आए।

निष्कर्षात्मक सारांश

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण किशोरियों की उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता बहुआयामी चुनौतियों से प्रभावित होती है। सामाजिक दृष्टि से पितृसत्ता, बाल विवाह और रूढ़िवादी सोच; आर्थिक दृष्टि से गरीबी, संसाधनों की कमी और शिक्षा का खर्च; तथा संस्थागत दृष्टि से विद्यालयों की दूरी और परिवहन सुविधा का अभाव – ये सभी मिलकर शिक्षा की राह में गहरी बाधाएँ खड़ी करते हैं। हजारीबाग और चतरा का तुलनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि यद्यपि दोनों जिलों में समस्याएँ समान हैं, परंतु उनकी तीव्रता अलग है। हजारीबाग में स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, जबकि चतरा अधिक पिछड़ा हुआ है। इस प्रकार, यह अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि ग्रामीण किशोरियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए न केवल शैक्षणिक अवसंरचना का विकास आवश्यक है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव और आर्थिक सहयोग भी अनिवार्य है। जब तक समाज में लैंगिक समानता, परिवारों की सोच में बदलाव और आर्थिक अवसरों का विस्तार नहीं होगा, तब तक ग्रामीण किशोरियों की उच्च शिक्षा की राह कठिन बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

चक्रवर्ती, उ. (2003). *जेंडरिंग कास्ट: थ्रू ए फेमिनिस्ट लेंस*. कोलकाता: स्त्री प्रकाशन।

चक्रवर्ती, उ. (1995). जेंडर, जाति और श्रम: विधवा जीवन की वैचारिक और भौतिक संरचना। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 30*(36), 2248–2256.

सांगरी, क., एवं वैद, स. (संपा.). (1990). *रीकास्टिंग वीमेन: एसेज़ इन कॉलोनियल हिस्ट्री*. नई दिल्ली: काली फॉर वीमेन।

नरसिम्हन, स. (1992). *सती: विडो बर्निंग इन इंडिया*. न्यूयॉर्क: एंकर बुक्स।

मणि, ल. (1998). *कंटेंशियस ट्रेडिशन्स: द डिबेट ऑन सती इन कॉलोनियल इंडिया*. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस।

ओल्डेनबर्ग, वि. टी. (2002). *डाउरी मर्डर: द इम्पीरियल ओरिजिन्स ऑफ अ कल्चरल क्राइम*. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

यांग, अ. ए. (1989). किसका सती? उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक भारत में विधवा दहन। *जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़, 48*(4), 741–760. https://doi.org/10.2307/2058235

शर्मा, अ. (1988). *सती: ऐतिहासिक और प्रक्षेपणात्मक निबंध*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

कुमार, र. (1993). रूप कंवर की सती: आधुनिक भारत में राज्य और महिलाएँ। एम. नुसबाम एवं जे. ग्लोवर (संपा.), *वूमेन, कल्चर एंड डेवलपमेंट: ए स्टडी ऑफ ह्यूमन कैपेबिलिटीज* (पृ. 125–156) में। ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस।

पोकॉक, डी. एफ. (1985). गुजरात के पाटीदार समुदाय में विधवापन। *कॉन्ट्रिब्यूशन्स टू इंडियन सोशियोलॉजी, 19*(1), 67–85. https://doi.org/10.1177/006996678501900104

हावली, जे. एस. (1994). सती, मातृदेवी और ब्रिटिश: सशक्तिकरण और जमी हुई परंपरा। *जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़, 53*(2), 354–372. https://doi.org/10.2307/2059830

स्पिवाक, जी. सी. (1993). क्या सबाल्टर्न बोल सकता है? पी. विलियम्स एवं एल. क्रिसमैन (संपा.), *कॉलोनियल डिस्कोर्स एंड पोस्ट-कॉलोनियल थ्योरी: ए रीडर* (पृ. 66–111) में। न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5). (2021). *भारत एवं राज्य रिपोर्ट (2019–21)*. नई दिल्ली: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।

झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद (JEPC). (2020). *झारखंड में माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की स्थिति पर वार्षिक रिपोर्ट*. रांची: शिक्षा विभाग, झारखंड।

योजना आयोग. (2013). *बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–17), खंड III: सामाजिक क्षेत्र*. नई दिल्ली: भारत सरकार।